Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.05, December, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

Knowledgeable Research
ISSN 2583-6633
Vol.02, No.05, December,2023
http://knowledgeableresearch.com/

भारतीय संस्कृति में ईसाई संगीत की अवधारणा

डॉ प्रियंका शर्मा
(प्रवक्ता शिक्षा विभाग, एस.एस.पी.जी कॉलेज, शाहजहाँपुर)

****

शोध सार : *मानव जीवन में संगीत का बहुत अधिक महत्व है। धार्मिक संगीत हमेशा मनुष्य और ईश्वर के बीच संबंध को स्पष्ट करने की कोशिश करता है। इसके माध्यम से मानव भगवान के प्रेम में, ऊर्जा में, प्रार्थना में और आत्मा में भगवान की असीमता में शामिल होता है। धार्मिक संगीत में प्रकट होने वाले धार्मिक रहस्य आम आदमी के सामने बहुत आसानी से हो जाते हैं और व्यक्ति अपने धार्मिक ज्ञान की चिंता किए बिना भगवान के प्यार का महसूस करना और जीना शुरू कर देता है। ईसाई संगीत और भारतीय संगीत दो अलग-अलग धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं से आते हैं, लेकिन दोनों में कई दिलचस्प समानताएं और अंतः क्रियाएं हैं।*

संकेत शब्द: *संगीत, समानताएं, अंतः क्रियाएं, भारतीय संस्कृति*

****

ईसाई संगीत का भारत में इतिहास:

भारत में मसीही समुदाय का एक समृद्ध इतिहास है और इस धरोहर का एक महत्वपूर्ण अंग मसीही संगीत है, जो प्रारंभिक ईसाई धर्म के प्रचार से जुड़ा हुआ है, और यह संगीत परंपरा देश के विविध क्षेत्रों और भाषाओं में व्याप्त है, जो ईसाई धर्म के संदेश को जीवंत बनाती है। भारत में ईसाई धर्म की शुरुआत से मसीही संगीत का संबंध है। माना जाता है कि ईसाई धर्म भारत में ईसा के पहले शताब्दी में पहुंचा था। भारतीय मसीही संगीत का विशिष्ट चरित्र पश्चिमी (सीरियाई) और पूर्वी (नेस्टोरियन) ईसाई परंपराओं से प्रभावित हुआ। इसने स्थानीय संगीत और वाद्ययंत्रों को अपनाकर ईसाई धर्म के संदेश को भारत में व्यक्त किया।

Received Date: 14.12.2023
Publication Date: 30.12.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.05, December, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

संगीत का प्रयोग आदि काल से ही भगवान की आराधना के लिए किया जाता रहा है।

बाइबिल के भजन से, मध्यकालीन चर्च के स्पष्ट मंत्रों तक, भजनों तथा इक्कीसवीं सदी के स्तुति समवेत स्वरों में सदियों से काफी बदलाव आया है। भारत में ईसाई धर्म का एक दीर्घ इतिहास है जो महान प्रेरित थॉमस से आरम्भ हुआ था। भारतीय ईसाई परंपरा के अनुसार प्रेरित थॉमस केरल के कोडुंगल्लूर पहुंचे, 52 ई. में जहाँ उन्होंने यहूदी बस्तियों के बीच सुसमाचार फैलाया और सात चर्चों की स्थापना की जो वर्तमान केरल में और तमिलनाडु में है। किंवदंती के अनुसार, सैन थॉम बेसिलिका चेन्नई में स्थित था, वहां उस स्थान का निर्माण हुआ जहाँ सेंट थॉमस के अंतिम संस्कार किये गए थे। सेंट के अनुयायी सेंट थॉमस को सेंट थॉमस ईसाई, सीरियाई मालाबार ईसाई या नस्रानी भी कहा जाता है।

इतिहासकारों के मुताबिक बसरा के बिशप डेविड 300 ईस्वी के आसपास भारत में एक मिशनरी के रूप में भेजा गया था। कैना के थॉमस (नाई थॉम्मन) एक मेसोपोटामिया व्यापारी और मिशनरी भारत में एक मिशन 345 ई. में लेकर आये थे। यह दक्षिण भारत का पहला ईसाई समुदाय है जिसके निरंतर लिखित रिकॉर्ड उपलब्ध है।16 वीं शताब्दी में पुर्तगाली मिशनरियों के आगमन ने भी भारतीय मसीही संगीत को प्रभावित किया। पश्चिमी संगीत और वाद्ययंत्रों की उनकी आपूर्ति ने भारतीय ईसाई भजनों को एक नया आयाम दिया। 18 वीं और 19 वीं शताब्दी में यूरोपीय मिशनरियों की लगातार कोशिशों से भारतीय भाषाओं में भजन लिखने और संगीत बनाने का उत्साह बढ़ा।

20वीं शताब्दी में भारतीय मसीही संगीत में एक बड़ा परिवर्तन हुआ। भारतीय ईसाई कलाकारों ने स्वतंत्रता के बाद भारतीय शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत शैलियों को अपने भजनों में शामिल किया। यही समय मसीही संगीत की समकालीन शैली का जन्म हुआ जो गिटार, ड्रम और कीबोर्ड जैसे पश्चिमी वाद्ययंत्रों का उपयोग करता था।2011 की जनगणना के अनुसार ईसाई धर्म की आबादी लगभग 10% है और यह तेजी से बढ़ रही है। ईसाई भारत के सभी हिस्सों और जीवन के सभी क्षेत्रों में पाए जा सकते हैं। जिनमें दक्षिण भारत, कोंकण तट और उत्तर-पूर्व में महत्वपूर्ण लोग शामिल हैं। (बिटेनिक्स 2012) के अनुसार ईसाई धर्म का उदय हुआ रोमन कैथोलिक, बैपटिस्ट, प्रेस्बिटेरियन और पेंटेकोस्टल जैसे विभिन्न संप्रदाय में और यह अब अपनी संगीत प्राथमिकताओं के साथ स्वतंत्र चर्च हैं। ईसाई संगीत ने राज्यों के सुसमाचार को बनाए रखने में अपनी भूमिका निभाई है।

डॉ प्रियंका शर्मा
Received Date: 14.12.2023
Publication Date: 30.12.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.05, December, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

ईसाई संगीत में विविधता:

मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च के अमेरिकी मिशनरी उन्नीसवीं सदी के मध्य में भारत पहुंचे। उन्होंने बहुत जल्द ईसाई चर्च को पूजा में सहायता करने के लिए भजन-पुस्तकें प्रकाशित कीं। जो संस्करण विदेशी ओर भारतीय भाषाओं में थे, जिसे विभिन्न संप्रदायों के मिशनरियों, और महिला और पुरुष ने अपनाया और यहां तक कि उन लोगों की भी जिन्होंने अभी तक ईसाई के रूप में बपतिस्मा नहीं लिया है। बढ़ती भागीदारी को प्रदर्शित किया गया। इसमें शामिल धुनें और कविताएं यूरोपीय और भारतीय दोनों रूपों में थीं। यह मिश्रित प्रकृति विशेष रूप से सदी के अंत तक स्पष्ट हुई जब मेथोडिस्ट प्रेस ने एक भजन-पुस्तक प्रकाशित की जिसमें भजनों और संडे स्कूल गीतों के अलावा ग़ज़लें और भजन भी शामिल किए।

ग़ज़लों के एक अलग खंड को शामिल करना उत्तर भारत में ईसाइयों की पूजा पर मुस्लिम संस्कृति के प्रभाव का प्रमाण था। संस्कृतियों का यह मिश्रण क्षेत्र में उभरते चर्च द्वारा निर्मित भजन संगीत की एक अनिवार्य विशेषता थी और इसका उपयोग प्रचार और पूजा दोनों में किया जाता था। भारतीय और विदेशी प्रचारक श्रोताओं को आकर्षित करने और ईसाई सुसमाचार का संचार करने के लिए स्वदेशी संगीत पर निर्भर थे।

ईसाई संगीत पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव:

भारतीय ईसाई चर्च के लिए सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक इसकी पश्चिमी पृष्ठभूमि है। अधिकांश मुख्यधारा संप्रदाय पश्चिमी पूजा पद्धति और संगीत का उपयोग करके पूजा करते हैं। जब मिशनरी भारत पहुंचे, तो उन्होंने पूजा में उपयोग करने के लिए बाइबिल और अपने स्वयं के भजनों का स्थानीय भाषाओं में अनुवाद किया। हालाँकि, एक सदी के बाद भी मंडलियाँ उसी भजन और अनुवादित पुस्तक ऑफ़ कॉमन प्रेयर का उपयोग करके पूजा करना जारी रखती हैं। इसके अलावा भारतीय चर्च ने मुख्य रूप से पश्चिमी सीटों और मुद्राओं को अपनाया है। नई पीढ़ी की मंडलियां तेजी से यूरो-अमेरिकी वर्तमान ईसाई संगीत के गीतों को अपना रही हैं, जिसके परिणामस्वरूप और भी अधिक पश्चिमी पूजा हो रही है।

पूजा के स्वदेशीकरण में संगीत अत्यंत महत्वपूर्ण है। चर्च ने हमेशा भारतीय संगीत का उपयोग केवल धर्म प्रचार के लिए और पश्चिमी धुनों का सामूहिक पूजा में उपयोग किया है।

डॉ प्रियंका शर्मा
Received Date: 14.12.2023
Publication Date: 30.12.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.05, December, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

भजन और कीर्तन जैसे लोकप्रिय संगीत प्रकारों को कॉर्पोरेट पूजा में शामिल किया। यह वह धुन है जो हर भारतीय सुबह-सुबह अपने मंदिरों से सुनता है। ये रूप जो हिंदू भक्ति (भक्ति) परंपराओं में उत्पन्न हुए, सामूहिक उपयोग के लिए अत्यधिक अनुकूलनीय हैं। नेता भजन से एक वाक्य गाता है, जिसे मंडली छोटे झांझ के साथ दोहराती है। कई भजन और बाइबिल के अन्य अंश उत्कृष्ट भजन बन सकते हैं।

कई भारतीय ईसाई पूजा में भारतीय संगीत का प्रभावी ढंग से उपयोग करने की कल्पना नहीं कर सकते क्योंकि उन्होंने इसे कभी देखा या अनुभव नहीं किया है। बच्चों को स्वदेशी संगीत और अन्य रचनात्मक रूपों का उपयोग करके पूजा करने का अवसर प्रदान करना महत्वपूर्ण है ताकि वे इसे स्वयं अनुभव कर सकें।

एक अन्य संगीत विकल्प भजनों को भारतीय संगीत शैलियों में पुन: कॉन्फ़िगर करना है। भजनों में धर्म के इतिहास से एक समृद्ध धर्मशास्त्र है और उन्हें स्थानीय संगीत परंपराओं से जोड़कर और शब्दों को उपयुक्त रूप से बदलकर भारतीय संदर्भों में प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सकता है।यह प्रस्ताव करना विरोधाभासी हो सकता है कि भारतीय चर्च को सूचित किया जाना चाहिए कि ईसाई पूजा में भारतीय संगीत और भजनशास्त्र का उपयोग करना उचित नहीं है। भारत में ईसाई चर्च तीसरी शताब्दी का है लेकिन रोमन चर्च की स्थापना सोलहवीं शताब्दी में हुई थी। पिछली दो शताब्दियों में भारत के कई हिस्सों में प्रोटेस्टेंट चर्चों का गठन किया गया है। यह आश्चर्य की बात है कि भारतीय चर्च में अभी भी पश्चिमी संगीत का उपयोग किया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय चर्च चाहे वह सीरियाई, रोमन या प्रोटेस्टेंट हो, अभी तक भारत में वास्तव में स्वदेशी नहीं बन पाया है।

आधुनिक भारतीय मसीही संगीत:

मसीही संगीत पिछले कुछ दशकों में एक नया रूप ले लिया है। समकालीन संगीत शैलियों जैसे रॉक, पॉप और हिप-हॉप के प्रभाव के कारण, यह एक प्रभावी माध्यम बन गया है जो युवा पीढ़ी को आकर्षित करता है। यह नया संगीत अक्सर हिंदी और अंग्रेजी के शब्दों को मिलाकर बनाता है और आधुनिक धुनों के साथ बाइबिल के संदेशों को जोड़ता है। **इंजीलवाद** के बढ़ते रुझान से भी इस आधुनिक मसीही संगीत का उदय जुड़ा हुआ है। ये गीत चर्चों में उपासना सत्रों और ईसाई समारोहों में बहुत लोकप्रिय हैं।

Received Date: 14.12.2023
Publication Date: 30.12.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.05, December, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

समकालीन भारतीय मसीही संगीत:

आज भारतीय मसीही संगीत काफी बदल गया है। इसे नवीनतम संगीत वाद्ययंत्रों और प्रौद्योगिकी से बदल दिया जा रहा है। रॉक, पॉप, जैज़ और हिप-हॉप आजकल मसीही संगीत में शामिल हैं। इस बदलाव का एक बड़ा कारण युवा पीढ़ी को ईसाई धर्म में शामिल करना है। समकालीन संगीत युवाओं को आकर्षित करने का सफल माध्यम बन गया है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जैसे सोशल मीडिया और यूट्यूब ने भी मसीही संगीत को व्यापक रूप से फैलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। समकालीन भारतीय मसीही कलाकारों में से कुछ लोकप्रिय कलाकारों में शामिल हैं।

निष्कर्ष:

ईसाई संगीत और भारतीय संगीत दोनों ने सदियों से सहयोग और समन्वय का एक समृद्ध इतिहास है। दोनों परंपराएं स्वर, लय, ताल और वाद्ययंत्रों का उपयोग करती हैं। और वे समान रूप से सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों में काम करती हैं। वर्तमान संगीतकारों ने दोनों परंपराओं के तत्वों का मिश्रण किया, जो इस जीवंत और विकसित होने वाली परंपरा का प्रमाण है। ईसाई और भारतीय संगीत के बीच सहयोग और समन्वय की एक समृद्ध और जीवंत परंपरा सदियों से चल रही है। वर्तमान संगीतकारों द्वारा दोनों परंपराओं के तत्वों का मिश्रण इस परंपरा की निरंतर प्रासंगिकता और विकास का सबूत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

Damian, Lucian. (2022). Christian music in scripture and tradition. Technium Social Sciences Journal. 27. 1010-1014. 10.47577/tssj.v27i1.5712.

Vedabala, Samidha & Dural, Eric. (2022). Preferences for Christian Music and its Trends: A Study in Sikkim. Vol 8. 201-205.

Studies in World Christianity, Alan M. Guenther, Volume 25 Issue 2, Page 145-165, ISSN 1354-9901 Available Online Jul 2019. (https://doi.org/10.3366/swc.2019.0254)

September 01, 2014 by Jacob Joseph, Indigenized Christian Worship in India

डॉ प्रियंका शर्मा
Received Date: 14.12.2023
Publication Date: 30.12.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.05, December, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

https://www.britannica.com/art/Indian-music

https://en.wikipedia.org/wiki/Saint_Thomas_Christian_music

http://biblicalstudies.gospelstudies.org.uk/pdf/ijt/06-3_080.pdf

Received Date: 14.12.2023
Publication Date: 30.12.2023